Toppersnotes®
Unleash the topper in you

# वन दरोगा

## वन एवं वन्यजीव रक्षक उत्तर प्रदेश

**UTTAR PRADESH SUBORDINATE SERVICE SELECTION COMMISSION**

## मुख्य परिक्षक

भाग – 1

## हिन्दी परिज्ञान एवं लेखन योग्यता

SIERRA INNOVATIONS

# उत्तर प्रदेश वनरक्षक एवं वन्य जीव – रक्षक


| क्र.सं. | अध्याय | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| | हिन्दी | |
| 1. | वर्ण विचार | 1 |
| 2. | भाषा | 5 |
| 3. | संज्ञा | 8 |
| 4. | सर्वनाम | 10 |
| 5. | विशेषण | 11 |
| 6. | क्रिया | 12 |
| 7. | अव्यय/अविकारी शब्द | 20 |
| 8. | लिंग | 24 |
| 9. | वचन | 29 |
| 10. | काल | 30 |
| 11. | कारक | 32 |
| 12. | वाच्य | 36 |
| 13. | संधि | 39 |
| 14. | समास | 55 |
| 15. | उपसर्ग | 61 |
| 16. | प्रत्यय | 64 |
| 17. | विराम चिह्न और उनके प्रयोग | 68 |
| 18. | शब्दकोश (शब्द क्रम निर्धारण) | 72 |
| 19. | शब्द शक्ति | 75 |
| 20. | पद परिचय | 81 |
| 21. | तत्सम - तद्भव | 84 |
| 22. | देशज शब्द, विदेशज एवं संकर शब्द | 86 |
| 23. | वाक्य रचना | 90 |
| 24. | वर्तनी शुद्धि | 94 |
| 25. | शुद्ध–वर्तनी एवं वाक्य शुद्धि | 97 |
| 26. | शब्द युग्म | 108 |

| | | |
|---|---|---|
| 27. | अनेकार्थक शब्द | 119 |
| 28. | पर्यायवाची | 122 |
| 29. | विलोम – शब्द | 125 |
| 30. | वाक्य के लिए एक शब्द | 133 |
| 31. | मुहावरे | 139 |
| 32. | लोकोक्ति | 143 |
| 33. | अनुवाद | 147 |
| 34. | अपठित गद्यांश | 156 |

# वर्ण विचार

भाषा – परस्पर विचार विनियम को भाषा कहते हैं।

- भाषा संस्कृत के भाष् शब्द से बना है । भाष् का अर्थ है बोलना ।
- भाषा की सार्थक इकाई वाक्य है । वाक्य से छोटी इकाई उपवाक्य, उपवाक्य से छोटी इकाई पदबंध, पदबंध से छोटी इकाई पद (शब्द), पद से छोटी इकाई अक्षर व अक्षर से इकाई ध्वनि या वर्ण है ।
- जैसे – हम शब्द में दो अक्षर (हम) एवं चार वर्ण (ह् अ म् अ) है ।

लिपि –किसी भाषा को लिखनें का ढंग लिपि कहलाता है । हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी है । इसकी निम्न विशेषताएँ है ।

(i) यह बाएँ से दायें लिखी जाती है ।
(ii) प्रत्येक वर्ण का एक ही रूप होता है ।
(iii) उच्चारण के अनुरूप लिखी जाती है अर्थात जैसे बोली जाती है, वैसी लिखी जाती है ।

व्याकरण – जिस शास्त्र में शब्दों के शुद्ध रूप एवं प्रयोग के नियमों का निरूपण होता है, उसे व्याकरण कहते है ।

वर्ण – हिंदी भाषा में वर्ण वह मूल ध्वनि है जिसका विभाजन नहीं हो सकता

किसी भी भाषा की सबसे छोटी इकाई (ध्वनि) वर्ण कहलाती है ।
जैसे :– क्, च्, ट् अ, इ, उ

वर्ण के भेद :– 2 प्रकार
(i) स्वर वर्ण (ii) व्यंजन वर्ण

स्वर वर्ण :– स्वतंत्र रूप से बोले जाने वाले वर्ण स्वर कहलाते हैं । हिन्दी वर्णमाला में कुल ग्यारह (11) स्वर ध्वनियाँ शामिल की गयी है ।

जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

स्वरो का वर्गीकरण :– मुख्यतः 5 आधार पर वर्गीकरण किया गया है ।

1. मात्राकाल के आधार पर – 3 प्रकार
(i) ह्रस्व स्वर – जिनके उच्चारण मे एक मात्रा का समय लगता है –
अ, इ, उ, ऋ (कुल संख्या –4)

नोट :– (इनको एकमात्रिक स्वर, मूल स्वर भी कहते है)

(ii) दीर्घ स्वर – जिनके उच्चारण में दो मात्रा का समय लगता है – आ, ई, ऊ, ए, ऐ ओ, औ (कुल संख्या – 7)

(iii) प्लुत स्वर – जिनके उच्चारण में तीन मात्राओ का समय लगता है – स्वर के प्लुत रूप को दर्शाने के लिए उनके साथ 3 का चिह्न लगाया जाता है ।
जैसे :– अ$^3$, आ$^3$, इ$^3$, ई$^3$, उ$^3$, ऊ$^3$, ए$^3$, ऐ$^3$, ओ$^3$, औ$^3$,

(2) उच्चारण के आधार पर :– (2 प्रकार)
(i) अनुनासिक स्वर – स्वर का उच्चारण करने पर वायु मुख व नाक दोनो से बाहर आती है ।

नोटः– अनुनासिक रूप को दर्शाने के लिए चन्द्रबिंदु का प्रयोग होता है ।
जैसे :– अँ आँ इँ ईं उँ ऊँ एँ, ऐं ओं औं

(ii) अननुनासिक/निरनुनासिक स्वर – जब किसी स्वर का उच्चारण करनें पर श्वास वायु केवल मुख से ही बाहर निकलती है । वह अननुनासिक/ निरनुनासिक स्वर कहलाता है ।
श्बना चन्द्रबिन्दू के अपने मूल रूप में लिखे हुए स्वर अनुनासिक माने जाते है ।
जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ए, ऐ, ओ, औ,

(3) जिह्वा के आधार पर :– (3 प्रकार)
(i) अग्र स्वर :– उच्चारण करने पर जीभ के आगे वाले भाग मे सर्वाधिक कम्पन होना ।
जैसे – इ, ई, ए, ऐ
(ii) मध्य स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के मध्य भाग में कम्पन – अ

(iii) पश्च स्वर – उच्चारण करने पर जीभ के पिछले भाग में अधिक कम्पन ।
आ, उ, ऊ, ओ, औ

पहचान :– निम्न सारणी के माध्यम से अग्र, पश्च, मध्यम भाग को जाने

मध्य – अ – मध्य
इ ई ए ऐ – अग्र
आ उ ऊ ओ औ – पश्च

(4) होठों की गोलाई के आधार पर – 2 प्रकार

(i) वृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल हो जाना ।
जैसे :– उ, ऊ ओ, औ

(ii) अवृत्ताकार – उच्चारण करने पर होठों का आकार गोल न होकर ऊपर–नीचे फैलना ।
जैसे – अ, आ, इ, ई ए, ऐ

(5) मुखाकृति के आधार पर – 04 प्रकार
(i) संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का कम खुलना ।
जैसे – इ, ई, उ, ऊ

(ii) अर्द्ध संवृत स्वर – उच्चारण करने पर मुँह का संवृत से थोडा ज्यादा खुलना – ए, ओ

(iii) विवृत – उच्चारण करने पर मुख का सबसे ज्यादा खुलना । जैसे – आ

(iv) अर्द्धविवृत :– उच्चारण करने पर मुँह का विवृत से थोडा कम खुलना ।
जैसे – अ, ऐ, औ, ऑ

## व्यंजन वर्ण

स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण व्यंजन कहलाते है ।
हिन्दी वर्णमाला में कुल 35 मूल (33 + 2 उत्क्षिप्त) व्यंजन ध्वनियाँ होती है ।
जिनको तीन भागों में बाँटा गया है ।
(i) स्पर्श व्यंजन – (27) (मूल 25 + 2 उत्क्षिप्त)
(ii) अतः स्थ व्यंजन – (04)
(iii) उष्म व्यंजन – (04)

### (i) स्पर्श व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु हमारे मुख के किसी अंग को स्पर्श करने के बाद मुख से बाहर निकलती है तो वह स्पर्श व्यंजन कहलाती है ।

स्पर्श व्यंजन को 5 भागों में बाँटा गया है –
(अ) 'क' वर्ग – क् ख् ग् घ् ङ.
(ब) 'च' वर्ग – च् छ् ज् झ् ञ्
(स) 'ट' वर्ग – ट् ठ् ड् ड. ढ् ढ. ण्
(द) 'त' वर्ग – त् थ् द् ध् न्
(य) 'प' वर्ग – प् फ् ब् भ् म्

### (ii) अतः स्थ व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर सर्वप्रथम हमारे मुख के अन्दर स्थित स्वर तंत्रियो में कम्पन होता है, व उसके बाद श्वास वायु मुख में बाहर निकलती है तो वह अन्तःस्थ व्यंजन कहलाती है ।

कुल अन्तः स्थ व्यंजन – 4
जैसे :– य् व् र् ल्

### (iii) उष्म व्यंजन

जब किसी व्यंजन का उच्चारण करने पर श्वास वायु मुख से बाहर निकलते समय हल्की गर्म हो जाती है, तो वह उष्म व्यंजन कहलाता है ।

कुल उष्म व्यंजन – 4
जैसे – श् ष् स् ह्

संयुक्त व्यंजन :– इसी श्रेणी मे 4 व्यंजन शामिल किये जाते है ।
क्ष – क् + ष
त्र – त् + र
ज्ञ – ज् + ञ
श्र – श् + र

व्यंजनों का वर्गीकरण – मुख्यतः 2 प्रकार
(1) उच्चारण स्थान के आधार पर
(2) प्रयत्न के आधार पर
(1) उच्चारण स्थान के आधार पर –

i. कण्ठ स्थान – 'कण्ठ्य वर्ग'
सूत्र – अकुहविसर्जनीयानां कण्ठः
अ, आ, क वर्ग (क,ख,ग,घ,ङ.) ह, विसर्ग (अः)

ii. तालु स्थान – तालव्य वर्ग
सूत्र – इचुयशानां तालु
इ, ई, च वर्ग (च,छ,ज,झ,ञ) य, श

iii. मूर्धा स्थान – मूर्धन्य वर्ग
सूत्र – ऋटुरषाणां मूर्धा
ऋ,ॠ ट वर्ग (ट,ठ,ड,ड,ढ,ढ,ण) र, ष

iv. दन्त स्थान – दन्त्य वर्ग
सूत्र – लृतुलसानां दन्ता
लृ, त वर्ग (त,थ,द,ध,न) ल, स

v. ओष्ठ स्थान – ओष्ठ्य वर्ण
सूत्र – उपूपध्मानीया ना मो ष्ठौ
उ, ऊ, प वर्ग (प,फ,ब,भ,म)
उपध्मानीय वर्ण (ऽप, ऽफ)

vi. नासिका स्थान – नासिक्य वर्ण
सूत्र – नासिका अनुस्वारस्य (अं)
ञमङणनानां नासिका च
(ङ् ञ ण न म्)

vii. दन्तोष्ठ स्थान – दन्तोष्ठ्य वर्ण
सूत्र – वकारस्य दन्तोष्ठम् – व

(2) <u>प्रयत्न के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण</u>
मुख्यतः 3 भागों में बाँटा गया है –
(i) कंपन के आधार पर
(ii) श्वास वायु के आधार पर
(iii) उच्चारण के आधार पर

(i). <u>कंपन के आधार पर</u> – इसके आधार पर दो प्रकार के वर्ण होते हैं ।
1) <u>अघोष वर्ण</u> – प्रत्येक वर्ग का पहला + दूसरा वर्ण + श,ष,स+विसर्ग
<u>अघोष वर्ण</u> – ट्रीक – 1,2 बजते ही ऊष्मा में विसर्जन का अवघोष हो जाता है । प्रत्येक वर्ग का पहला, दूसरा वर्ण, ऊष्म वर्ण (श,ष,स) विसर्ग
2) <u>घोष वर्ण</u> – प्रत्येक वर्ग का 3,4,5 वर्ण + ङ, ढ + य,र,ल,व,ह + सभी स्वर + अनुस्वार
<u>घोष वर्ण</u> – ट्रीक – 3,4,5 की घुस लेते ही सभी स्वरों को ङ ढ के साथ नियम अनुसार अंदर कर दिया ।
प्रत्येक वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवा वर्ण + सभी स्वर + ङ ढ + अनुस्वार

(ii). <u>श्वास वायु के आधार पर</u> –
मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं ।
1) <u>अल्पप्राण</u> – प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवा वर्ण + ञ, र, ल, व + सभी स्वर
<u>अल्प प्राण</u> – ट्रीक –उल्प आयु में 1,3,5 का अन्त हुआ व ञ के साथ सभी स्वर्ग गये ।
अन्पप्राण में आने वाले व्यंजन – प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा, पाँचवाँ वर्ण + अंतःस्थ व्यंजन + ङ सभी स्वर
2) महाप्राण – प्रत्येक वर्ग का 2,4 वर्ण + ढ + श, ष, स, ह
<u>महाप्राण</u> –महाम 2,4 घण्टे ढका रहने से ऊष्मा बढती है ।
महाप्राण में आने वाले वर्ण – प्रत्येक वर्ग का 2 व 4 वर्ण, + ऊष्म वर्ण (श,ष,स) + ह वर्ण)

(iii). <u>उच्चारण के आधार पर</u> –
इस आधार पर व्यंजन 8 प्रकार के होते हैं ।
1) स्पर्शी व्यंजन (16) क, ख, ग, घ, ट, ठ, ड, ढ, त, थ, द, ध, प, फ, ब, भ
2) स्पर्श संघर्षी व्यंजन (4) – च, छ, ज, झ
3) संघर्षी व्यंजन (4) – श, ष, स, ह
4) नासिक व्यंजन (5) – ङ, ञ, ण, न, म
5) उत्क्षिप्त व्यंजन (2) – ड., ढ
6) प्रकंपित व्यंजन (1) – र
7) पार्श्विक व्यंजन (1) – ल
8) संघर्षहीन व्यंजन (2) – य, व

<u>परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण तथ्य ''वर्ण विचार'' से संबंधित)</u>

- दीर्घ स्वर को संयुक्त स्वर के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि दीर्घ स्वरों की रचना प्राय दोनों स्वरों के मिलने से होती है ।
- सात दीर्घ स्वरों को भी दो भागों समानाक्षर स्वर, संधि स्वर के रूप में विभाजित किया जाता है ।

| | समानाक्षर स्वर | संधि स्वर |
|---|---|---|
| (i) | आ – अ + अ | ए – अ + इ |
| (ii) | ई – इ + इ | ऐ – अ – ए |
| (iii) | ऊ – उ + उ | औ – अ + ओ |

- प्लुत स्वर वर्गीकरण का सर्वप्रथम साक्ष्य पाणिनि की अष्टाध्यायी रचना में मिलता है ।
- हिन्दी वर्णमाला में कुछ व्यंजन शब्दों के नीचे नुक्ता (बिन्दु) का प्रयोग किया जाता हैं, जिन्हे आगत/गृहीत व्यंजन कहा जाता है ।
- आगत व्यंजनों की कुल संख्या 05 होती है ।

.क – .करीब
ख़ा – ख़ाना
ग़ – ग़म
ड़ा – ड़ा
.फ – .फन .फाइल (अंग्रेजी)

अंग्रेजी से गृहीत स्वर.
ऑ (ॅ)
जैसे – कॉलेज, डॉक्टर

- हिन्दी भाषा में आगत व्यंजनो का आगमन अरबी/फारसी, अंग्रेजी भाषा से हुआ है ।
- हिन्दी भाषा में नुक्ता व्यंजन की शुरूआत का श्रेय हिन्दी विद्वान ''विप्रप्रसाद सितारे हिंद'' को जाता है ।

(2) काकल वर्ण के अन्तर्गत है, (:) विसर्ग को शामिल किया जाता है ।

- वर्त्स वर्णो में न, रा, ल को शामिल किया जाता है ।
- उच्चारण स्थानों के अलावा शरीर के वे अंग जो उच्चार करनें में सहायक हो करण कहलते हैं । इसकी कुल संख्या चार होती है ।
  (1) जिह्वा (2) अधरोष्ठ (नीचे का होंठ) (3) स्वर तंत्रियाँ (4) कोमल तालु
- तालु उच्चारण स्थान में आनें वाले वर्णो को कोमल तालव्य व कठोर तालव्य के रूप में दो भागो में विभाजित किया गया है ।
- हिन्दी वर्णमाला में अं (अनुस्वार), अः (विसर्ग) को अयोगवाह वर्ण कहा जाता है । क्योंकि इन वर्णों को न तो स्वरों में जोडा जाता है व न ही व्यंजनों में अतः अयोगवाही वर्ण कहलाते है ।
- हल् चिह्न ( ् ) व्यंजन के स्वर रहित होनें को परिचायक है । स्वर रहित व्यंजन के साथ हल् का चिह्न लगाया जाता है या फिर खडी पाई वाले व्यंजन चिह्नो की खडी पाई हटा दी जाती है । उसके अर्द्धरूप का प्रयोग किया जाता है ।
  जैसे– विद्या, पाठ्य, अपराह्न, पट्टा आदि ।

1. नांद या संवार वर्ण – सभी घोष वर्णों को ही कहा जाता है ।
2. विवार या श्वास वर्ण – सभी अघोष वर्णों को ही कहा जाता है ।
3. स्पृष्ठ वर्ण – सभी स्पर्श व्यंजन वर्णों को ही कहा जाता है ।
4. ईषत्स्पृष्ट वर्ण – अन्तस्थ व्यंजन (य,र,ल,व) वर्णों को ही कहा जाता है ।
5. ईषद्विवृत वर्ण – उष्म व्यंजन (श, ष, स, ह)
6. स्क्त वर्ण –प्रत्येक वर्ग का पाँचवा वर्ण
7. सोष्म व्यंजन वर्ण – प्रत्येक वर्ग का दूसरा व चौथा वर्ण

ध्यान दें – हिन्दी वर्णमाला में मूल रूप से 11 स्वर व 33 व्यंजन सहित कुल 44 वर्ग होते है ।

हिन्दी वर्णमाला की वर्तमान में अपवादित स्थिति को सारणी के माध्यम से समझें ।

| स्वर | व्यंजन | कुल |
|---|---|---|
| स्वर 11 | व्यंजन 33 | 44 |
| – | ड., ढ. + (2) (उत्क्षिप्त व्यंजन) | 46 |
| – | अं, अः + (2) (अयोगवाह) | 48 |
| – | क्ष, त्र, ज्ञ, श्र + (4) संयुक्त व्यंजन | 52 |
| | .क .ख .ग .ड .फ + 5 गृहीत व्यंजन | 57 |

नोट – सर्वमान्य मत हिन्दी वर्णमाला में कुल 44 वर्ण होते है ।

उत्क्षिप्त वर्ण

जिन ध्वनियों के उच्चारण में जिह्वा मूर्द्धा को स्पर्श कर तुरन्त नीचे गिरती है, उन्हे उत्क्षिप्त वर्ण कहते है ।

जैसे – ड. ढ.

नियम – 1. यदि शब्द की शुरूआत उत्क्षिप्त वर्णों से हो तो लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है ।

जैसे – डमरू, ढोलक, डलिया, ढक्कन, डाली

नियम – 2. यदि शब्द के अन्तर्गत इनसे पहले आधा वर्ण आता है तो भी लिखते समय इनके नीचे बिंदु नहीं आता है ।

जैसे – पण्डित, बुड्ढा, अड.डा, खण्ड, मण्डल आदि ।

- उपर्युक्त दोनों नियमों के अलावा प्रत्येक स्थिति में इनके नीचे बिन्दु आता है ।
  जैसे – पढाई, लडाई, सड.क, पकड.ना, ढूँढना आदि ।

रकार/रेफ या र संबंधि नियम

नियम 1. – यदि र् के बाद व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखते है अर्थात जिस व्यंजन वर्ण से पहले र् का उच्चारण किया जाता है, र को उसी व्यंजन वर्ण के उपर लिखा जाता है ।

जैसे – कर्म, धर्म, वर्ण, दर्शक, स्वर्ग, अर्थात् , पुनर्जन्म, पुर्निमाण, आशीर्वाद ।

नियम 2. – यदि र् से पहले व्यंजन वर्ण आए तो र् को उसी व्यंजन वर्ण के मध्यय में लिखा जाता है ।

जैसे – प्रकाश, प्रभात, प्रेम, क्रम, भ्रम, भ्रष्ट, भ्राता

# भाषा

"भाषा वह साधन है, जिसके माध्यम से मनुष्य बोलकर, लिखकर या संकेत पर परस्पर अपना विचार सरलता, स्पष्टता, निश्चितता तथा पूर्णता के साथ प्रकट करता है ।

## बोली

"बोली किसी भाषा के एक ऐसे सीमित क्षेत्रीय रूप को कहते हैं जो ध्वनि, रूप, वाक्य गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरे आदि की दृष्टि से उस भाषा के परिनिष्ठित तथा अन्य क्षेत्रीय रूपों से भिन्न होता है; किन्तु इतना भिन्न नहीं कि अन्य रूपों के बोलने वाले उसे समझ न सकें, साथ ही जिसके अपने क्षेत्र में कहीं भी बोलनेवालों के उच्चारण, रूप-रचना, वाक्य-गठन, अर्थ, शब्द-समूह तथा मुहावरों आदि में कोई बहुत स्पष्ट और महत्वपूर्ण भिन्नता नहीं होती ।"

भाषा का क्षेत्र व्यापक हुआ करता है । इसे सामाजिक, साहित्यिक, राजनैतिक, व्यापारिक आदि मान्यताएँ प्राप्त होती हैं; जबकि बोली को मात्र सामाजिक मान्यता ही मिल पाती है । भाषा का अपना गठित व्याकरण हुआ करता है; परन्तु बोली का कोई व्याकरण नहीं होता । हाँ, बोली ही भाषा को नये-नये बिम्ब, प्रतीकात्मक शब्द, मुहावरे, लोकोक्तियाँ आदि समर्पित करती है । जब कोई बोली विकास करते-करते उक्त सभी मान्यताएँ प्राप्त कर लेती है, तब वह बोली न रहकर भाषा का रूप धारण कर लेती है। जैसे-खडी बोली हिन्दी जो पहले (द्विवेदी-युग से पूर्व) मात्र प्रांतीय भाषा या बोली मात्र थी वह आज भाषा ही नहीं राष्ट्रभाषा का दर्जा प्राप्त कर चुकी है ।

एक बोली जब मानक भाषा बनती है और प्रतिनिधि हो जाती है तो आस-पास की बोलियों पर उसका भारी प्रभाव पडता है । आज की खडी बोली ने ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली, मगही आदि सभी को प्रभावित किया है । हाँ, यह भी देखा जाता है कि कभी-कभी मानक भाषा कुछ बोलियों को बिल्कुल समाप्त भी कर देती है । एक बात और है, मानक भाषा पर स्थानीय बोलियों का प्रभाव ही देखा जाता है ।

एक उदाहरण द्वारा इसे आसानी से समझा जा सकता है- बिहार राज्य के बेगूसराय खगडिया, समस्तीपुर आदि जिलों में प्रायः ऐसा बोला जाता है-

हम कैह देंगे । हम नैं करेंगे आदि ।

भोजपुर क्षेत्र में : हमें लौक रहा है (दिखाई पड रहा है) । हम काम किये (हमने काम किया)

पंजाब प्रान्त का असर : हमने जाना है (हमको जाना है)

दिल्ली-आगरा क्षेत्र मे : वह कहवे था/मैं जाऊँ । मेरे को जाना है ।

कानपुर आदि क्षेत्रों में : वह गया हैगा ।

एक भाषा के अंतर्गत कई बोलियाँ हो सकती हैं, जबकि एक बोली में कई भाषाएँ नहीं होती ।

बोली बोलनेवाले भी अपने क्षेत्र के लोगों से तो बोली में बातें करते हैं; किन्तु बाहरी लोगों से भाषा का ही प्रयोग करते हैं ।

ग्रियर्सन के अनुसार भारत में 6 भाषा-परिवार, 179 भाषाएँ और 544 बोलियों हैं -

(क) भारोपीय परिवार : उत्तरी भारत में बोली जाने वाली भाषाएँ ।

(ख) द्रविड परिवार : तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम ।

(ग) आस्ट्रिक परिवार : संताली, मुंडारी, हो, सवेरा, खडिया, कोर्क, भूमिज, गदवा, पलौंक, वा, खासी, मोनख्मे, निकोबारी ।

(घ) तिब्बती चीनी : लुशेइ, मेइथेइ, मारो, मिश्मी, अबोर-मिरी, अक ।

(ड) अवर्गीकृत : बुरूशास्की, अंडमानी भर

(च) करेन तथा मन : बर्मा की भाषा (जो अब स्वतंत्र है ।)

## हिन्दी भाषा

बहुत सारे विद्वानों का मत है कि हिन्दी भाषा संस्कृत से निष्पन्न है; परन्तु यह बात सत्य नहीं है । हिन्दी की उत्पत्ति प्राकृत से । प्राकृत भाषा अपने पहले की पुरानी बोलचाल की संस्कृत से निकली है । स्पष्ट है कि हमारे आदिम आर्यों की भाषा पुरानी संस्कृत थी । उनके नमूने ऋग्वेद में दिखते है । उसका विकास होते-होते कई प्रकार की प्राकृत भाषाएँ पैदा हुई । हमारी विशुद्ध संस्कृत किसी पुरानी प्राकृत से ही परिमार्जित हुई । प्राकृत भाषाओं के बाद अपभ्रंशों का जन्म हुआ और उनसे वर्तमान संस्कृतोत्पन्न भाषाओं की । हमारी वर्तमान हिन्दी, अर्द्धमागधी और शौरसेनी अपभ्रंश से निकली है ।

हिन्दी भाषा और उसका साहित्य किसी एक विभाग और उसके साहित्य के विकसित रूप नहीं हैं; वे अनेक विभाषाओं और उनके साहित्यों की समष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं । एक बहुत बडे क्षेत्र-जिसे चिरकाल से मध्यदेश कहा जाता रहा है - कि अनेक बोलियों के ताने-बाने से बुनी यही एक ऐसी आधुनिक भाषा है, जिसने अनजाने और अनौपचारिक रीति से देश की ऐसी व्यापक भाषा बनने

का प्रयास किया था, जैसी संस्कृत रहती चली आई थी; किन्तु जिसे किसी नवीन भाषा के लिए अपना स्थान तो रिक्त करना ही था ।

वर्तमान हिन्दी भाषा का क्षेत्र बडा ही व्यापक हो चला है । इसे निम्नलिखित विभागों में बाँटा गया है–

(क) बिहारी भाषा – बिहारी भाषा बँगला भाषा से अधिक संबंध रखती है । यह पूर्वी उपशाखा के अंतर्गत है और बँगला, उडिया और आसामी की बहन लगती है । इसके अंतर्गत निम्न बोलियाँ हैं– मैथिली, मगही, भोजपुरी, पूर्वी आदि । मैथिली के प्रसिद्ध कवि विद्यापति ठाकुर और भोजपुरी के बहुत बडे प्रचारक भिखारी ठाकुर हुए ।

(ख) पूर्वी हिन्दी – अर्द्धमागधी प्राकृत के अपभ्रंश से पूर्वी हिन्दी निकली है । गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस–जैसे महाकाव्यों की रचना पूर्वी हिन्दी में ही की । दूसरी तीन बोलियाँ हैं– अवधी, बघेली और छत्तीसगढी । मलिक मोहम्मद जायसी ने अपनी प्रसिद्ध रचनाएँ इसी भाषा में लिखी हैं ।

(ग) पश्चिमी हिन्दी – पूर्वी हिन्दी तो बाहरी और भीतरी दोनों शाखाओं की भाषाओं के मेल से बनी है; परन्तु पश्चिमी हिन्दी का संबंध भीतरी शाखा से है ।

यह राजस्थानी, गुजराती और पंजाबी से संबंध रखती है । इस भाषा के कई भेद हैं––हिन्दुस्तानी, ब्रज, कन्नौजी, बुँदेली, बाँगरू और दक्षिणी ।

गंगा–यमुना के बीच मध्यवर्ती प्रान्त में और उसके दक्षिण दिल्ली से इटावा तक ब्रजभाषा बोली जाती है । गुडगाँव और भरतपुर, करौली और ग्वालियर तक ब्रजभाषी है । इस भाषा के कवियों में सूरदास और बिहारीलाल ज्यादा चर्चित हुए ।

कन्नौजी, ब्रजभाषा से बहुत कुछ मिलती–जुलती है । इटावा से इलाहाबाद तक इसके बोलनेवाले हैं । अवध के हरदोई और उन्नाव में यही भाषा बोली जाती है ।

बुँदेली बुंदेलखंड की बोली है । झाँसी, जालौन, हमीरपुर और ग्वालियर के पूर्वी प्रान्त, मध्यप्रदेश के दमोह छत्तीसगढ के रायपुर, सिउनी, नरसिंहपुर आदि स्थानों की बोली बुँदेली है । छिंदवाडा और हुशंगाबाद के कुछ हिस्सों में भी इसका प्रचार है ।

हिसार, झींद, रोहतक, करनाल आदि जिलों में बाँगरू भाषा बोली जाती है। दिल्ली के आसपास की भी यही भाषा है ।

दक्षिणी हिन्दी बोलनेवाले मुंबई, बडौदा, बरार, मध्य प्रदेश, कोचीन, कुर्ग, हैदराबाद, चेन्नई, माइसोर और ट्रावनकोर तक फैले हैं । इन क्षेत्रों के लोग मुझे या मुझको की जगह 'मेरे को' बोलते हैं ।

**भारत की भाषाओं की सूची**

| क्र.सं. | भाषाएँ | बोलनेवालों का अनुपात % में |
|---|---|---|
| 1. | संस्कृत | 0.01 |
| 2. | मैथिली | 0.9 |
| 3. | मराठी | 7.5 |
| 4. | नेपाली | 0.3 |
| 5. | पंजाबी | 2.8 |
| 6. | संथाली | 0.6 |
| 7. | मलयालम | 3.6 |
| 8. | मणिपुरी | 0.2 |
| 9. | असमिया | 1.6 |
| 10. | ओडिया | 3.4 |
| 11. | गुजराती | 4.9 |
| 12. | कश्मीरी | 0.5 |
| 13. | कन्नड | 3.9 |
| 14. | डोगरी | 0.2 |
| 15. | कोंकणी | 0.2 |
| 16. | बांग्ला | 8.3 |
| 17. | तमिल | 6.3 |
| 18. | सिंधी | 0.3 |
| 19. | उर्दू | 5.2 |
| 20. | बोडो | 0.1 |
| 21. | तेलुगू | 7.9 |
| 22. | हिन्दी | 40.2 |

## देवनागरी लिपि

'हिन्दी' और 'संस्कृत' देवनागरी लिपि में लिखी जाती है। 'देवनागरी लिपी का विकास 'ब्राह्मी लिपि' से हुआ, जिसका सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात नरेश जयभट्ट के एक शिलालेख में मिलता है । 8वीं एवं 9वीं सदी में क्रमशः राष्ट्रकूट नरेशों बडौदा के ध्रुवराज ने अपने देशों में इसका प्रयोग किया था । महाराष्ट्र में इसे 'बालबोध' के नाम से संबोधित किया गया ।

देवनागरी लिपि पर तीन भाषाओं का बडा महत्वपूर्ण प्रभाव पडा ।

1. फारसी प्रभाव – पहले देवनागरी लिपि में जिह्वामूलीय ध्वनियों को अंकित करने के चिह्न नहीं थे, जो बाद

में फारसी से प्रभावित होकर विकसित हुए- क, ख, ग, ज, फ ।

2. बांग्ला–प्रभाव – गोल–गोल लिखने की परम्परा बांग्ला लिपि के प्रभाव के कारण शुरू हुई ।
3. रोमन–प्रभाव – इससे प्रभावित हो विभिन्न विराम – चिह्नों, जैसे – अल्प विराम, अर्द्धविराम, प्रश्नसूचक चिह्न, विस्मयसूचक चिह्न, उद्धरण चिह्न एवं पूर्ण विराम में 'खडी पाई' की जगह 'बिन्दु' (Point) का प्रयोग होने लगा ।

## देवनागरी लिपि की विशेषताएँ –

- इसके ध्वनिक्रम पूर्णतया वैज्ञानिक हैं ।
- प्रत्येक वर्ग में अघोष फिर सघोष वर्ण हैं।
- वर्गों की अंतिम ध्वनियाँ नासिक्य हैं ।
- छपाई एवं लिखाई दोनों समान हैं ।
- ह्रस्व एवं दीर्घ में स्वर बँटे हैं ।
- निश्चित मात्राएँ हैं ।
- उच्चारण एवं प्रयोग में समानता है ।
- प्रत्येक के लिए अलग लिपि चिह्न है ।

# संज्ञा

## परिभाषा

- किसी प्राणी, स्थान, वस्तु तथा भाव के नाम का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाती हैं।
- साधारण शब्दों में नाम को ही संज्ञा कहते है।
- जैसे – अजय ने जयपुर के हवामहल की सुंदरता देखी।
- अजय एक व्यक्ति है, जयपुर स्थान का नाम है, हवामहल वस्तु का नाम है।

## संज्ञा के भेद –

संज्ञा के मुख्यतः तीन भेद है –

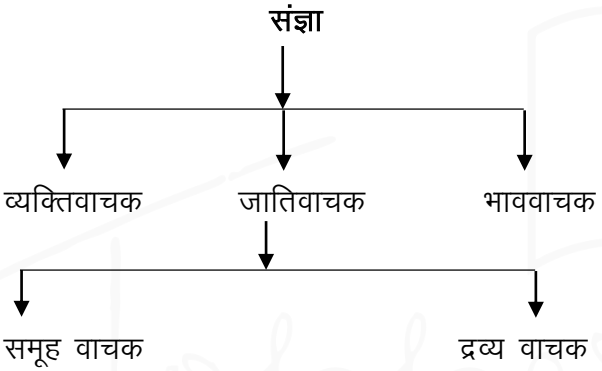


1. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से एक ही व्यक्ति, वस्तु, स्थान के नाम का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा विशेष का बोध कराती है सामान्य का नही।
   - व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियों, देशों, शहरों, नदियों, पर्वतों, त्योहारों, पुस्तकों, दिशाओ, समाचार–पत्रों, दिन, महीनों के नाम आते हैं।

2. **जातिवाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द से किसी जाति के संपूर्ण प्राणियों, वस्तुओं, स्थानों आदि का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। प्रायः जातिवाचक वस्तुओं, पशु–पक्षियों, फल–फूल, धातुओं, व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों, नगर, शहर, गाँव, परिवार, भीड़ जैसे समूहवाची शब्दों के नाम आते हैं।

| व्यक्तिवाचक संज्ञा | जातिवाचक संज्ञा |
|---|---|
| प्रशान्त महासागर | महासागर |
| भारत, राजस्थान | देश, राज्य |
| रामचन्द्र शुक्ल, महावीर द्विवेदी | इतिहासकार, कवि |
| रामायण, ऋग्वेद | ग्रंथ, वेद |
| अजय की भैंस | भदावरी, मुर्रा |
| हनुमानगढ, नोहर | जिला, उपखण्ड |
| ग्राण्ड ट्रंक रोड़ | रोड़, सड़क |

3. **भाववाचक संज्ञा** – जिस संज्ञा शब्द में प्राणियों या वस्तुओं के गुण, धर्म, दशा, कार्य, मनोभाव, आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं।
   - प्रायः गुण–दोष, अवस्था, व्यापार, अमूर्त भाव तथा क्रिया भाववाचक संज्ञा के अन्तर्गत आते हैं।
   - भाववाचक संज्ञा की रचना मुख्यतः पाँच प्रकार के शब्दों से होती हैं।
     1. जातिवाचक संज्ञा से
     2. सर्वनाम से
     3. विशेषण से
     4. क्रिया से
     5. अव्यय से

### जातिवाचक संज्ञा से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

| जातिवाचक संज्ञा | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|
| बच्चा | बचपन |
| शिशु | शैशव |
| ईश्वर | ऐश्वर्य |
| विद्वान | विद्वता |
| व्यक्ति | व्यक्तित्व |
| मित्र | मित्रता |
| बंधु | बंधुत्व |
| पशु | पशुता |
| बूढ़ा | बुढापा |
| पुरूष | पुरूषत्व |
| दानव | दानवता |
| इंसान | इंसानियत |
| सती | सतीत्व |
| लड़का | लड़कपन |
| आदमी | आदमियत |
| सज्जन | सज्जनता |
| गुरु | गौरव |
| चोर | चोरी |
| ठग | ठगी |

### विशेषण से बने भाववाचक संज्ञा शब्द

| विशेषण | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|
| बहुत | बहुतायत |
| न्यून | न्यूनता |
| कठोर | कठोरतर |
| वीर | वीरता |
| विधवा | वैधव्य |
| मूर्ख | मूर्खता |
| चालक | चालाकी |
| निपुण | निपुणता |
| शिष्ट | शिष्टता |
| गर्म | गर्मी |
| ऊँचा | ऊँचाई |
| आलसी | आलस्य |
| नम्र | नम्रता |
| सहायक | सहायता |
| बुरा | बुराई |
| चतुर | चतुराई |
| मोटा | मोटापा |
| शूर | शौर्य / शूरत |
| स्वस्थ | स्वास्थ्य |
| सरल | सरलता |
| मीठा | मिठास |
| आवश्यक | आवश्यकता |
| निर्बल | निर्बलता |
| हरा | हरियाली |
| काला | कालापन / कालिमा |
| छोटा | छुटपन |
| दुष्ट | दुष्टता |

### क्रिया से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

| क्रिया | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|
| बिकना | बिक्री |
| गिरना | गिरावट |
| थकना | थकावट |
| खेलना | खेल |
| हारना | हार |
| भूलना | भूल |
| पहचानना | पहचान |
| खेलना | खेल |
| सजाना | सजावट |
| लिखना | लिखावट |
| जमना | जमाव |
| पढ़ना | पढ़ाई |
| हंसना | हँसी |
| भूलना | भूल |
| उड़ना | ऊड़ान |

### अव्यय से बनें भाववाचक संज्ञा शब्द

| अव्यय | भाववाचक संज्ञा |
|---|---|
| उपर | उपरी |
| समीप | सामीप्य |
| दूर | दूरी |
| धिक् | धिक्कार |
| निकट | निकटता |
| शीघ्र | शीघ्रता |
| मना | मनाही |

- 'अन' प्रत्यय से जुड़ें शब्द भाववचाक संज्ञा शब्द माने जाते हैं।
  जैसे – व्याकरण वि + आ + कृ + अन
  कारण कृ + अन
- कुछ विद्वानों ने संज्ञा के दो अन्य भेद भी स्वीकार किये हैं।

1. **समुदायवाचक संज्ञा –** ऐसे संज्ञा शब्द जो किसी समूह की स्थिति को बताते हैं। समुदाय वाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसे – सभा, भीड़, ढेर, मण्डली, सेना, कक्षा, जुलूस, परिवार, गुच्छा, जत्था, दल आदि।

2. **द्रव्य वाचक संज्ञा –** किसी द्रव्य या पदार्थ का बोध कराने वाले शब्दों को द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।
   जैसे – दूध, धी, तेल, लोहा, सोना, पत्थर, ऑक्सीजन, पारा, चाँदी, पानी आदि।

**नोट –** जातिवाचक संज्ञा का कोई शब्द यदि वाक्य प्रयोग में किसी व्यक्ति के नाम को प्रकट करने लगे तो वहाँ व्यक्तिवाचक संज्ञा मानी जाती है।
**आजाद –** भारत की स्वतंत्रता में चन्द्रशेखर आजाद ने महत्त योगदान दिया था।
**सरदार –** सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत को जोड़नें की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
**गाँधी –** गाँधीजी ने असहयोग आंदोलन को शुरू किया था।

- ओकारान्त बहुवचन में लिखा विशेषण शब्द विशेषण न मानकर जातिवाचक संज्ञा शब्द माना जाता है।
  **जैसे –**

| | |
|---|---|
| गरीब | गरीबों |
| बड़ा | बड़ों |
| अमीर | अमीरों |

# सर्वनाम

**परिभाषा** – भाषा में सुंदरता, संक्षिप्तता, एवं पुनरुक्ति दोष से बचने के लिए संज्ञा के स्थान पर जिस शब्द का प्रयोग किया जाता है, वह सर्वनाम कहलाता है।

- सर्वनाम शब्द सर्व + नाम के योग से बना है जिसका अर्थ है – सब का नाम।
- सभी संज्ञाओं के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं। सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य में सहजता आ जाती है।
  जैसे – अमर आज विद्यालय नहीं आया क्योंकि वह अजमेर गया है।
- संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं।

**सर्वनाम के भेद – सर्वनाम के कुल 06 भेद हैं**

1. पुरुषवाचक
2. निश्चय वाचक
3. अनिश्चय वाचक
4. संबंध वाचक
5. प्रश्न वाचक
6. निजवाचक

1. **पुरुषवाचक सर्वनाम** – वे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग वक्ता, श्रोता, अन्य तीसरा (कहनें वाला, सुनने वाला, अन्य) जिसके लिए कहा जाए, के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।

   **पुरुषवाचक सर्वनाम को भी तीन भागों में बाँटा गया है**

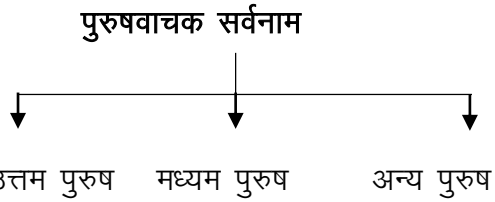


   **(i) उत्तम पुरुष** – बोलने वाला / लिखने वाला
   जैसे – मैं, हम, हम सब।

   **(ii) मध्यम पुरुष** – श्रोता/सुनने वाला
   जैसे – तू, तुम, आप, आप सब।

   **(iii) अन्य पुरुष** – बोलने वाला व सुनने वाला जिस व्यक्ति या तीसरे के बारें में बात करें वह अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।
   जैसे – यह, वह, ये, वे, आप।

2. **निश्चय वाचक सर्वनाम** – वे सर्वनाम शब्द जो पास या दूर स्थित व्यक्ति या पदार्थ की ओर निश्चितता का बोध कराते हैं। वे निश्चय वाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
   पास की वस्तु के लिए – यह
   दूर की वस्तु के लिए – वह

3. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** – वे सर्वनाम शब्द जिससे किसी व्यक्ति या वस्तु के बारें में निश्चतता का बोध नहीं होता हैं। अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
   जैसे – कोई
   - सजीवता के लिए – 'कोई' का प्रयोग
     निर्जीवता के लिए – 'कुछ' का प्रयोग
   - रमन को कोई बुला रहा है।
   - दूध मे कुछ गिरा है।

4. **संबंधवाचक सर्वनाम** – दो उपवाक्यों के बीच आकर सर्वनाम का संबंध दूसरे उपवाक्य के साथ दर्शाने वाले सर्वनाम संबंधवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
   जैसे – जिसकी लाठी उसकी भैंस।
   जो मेहनत करेगा वो सफल होगा।

5. **प्रश्नवाचक सर्वनाम** – जिस सर्वनाम शब्द का प्रयोग प्रश्न पूछने के लिए किया जाता हैं वह प्रश्नवाचक सर्वनाम कहलाता है।
   जैसे – वहाँ गलियारे से होकर कौन जा रहा था ?
   कल तुम्हारे पास किसका पत्र आया था ?

6. **निजवाचक सर्वनाम** – ऐसे सर्वनाम शब्द जिसका प्रयोग स्वयं के लिए किया जाता है, निजवाचक सर्वनाम कहलाते हैं।
   जैसे – आप, स्वयं, खुद।
   जैसे – मैं अपने आप चला जाऊँगा।

   सर्वनाम में आप शब्द का प्रयोग विभिन्न सर्वनामों में किया जाता है जिसका सही प्रयोग निम्न तरीकों से जाना जा सकता है।
   (i) अगर 'आप' शब्द का प्रयोग 'तुम' शब्द के रूप में किया जाता है तो – मध्यम पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।
   (ii) 'आप' शब्द का प्रयोग स्वयं के अर्थ में होने पर – निजवाचक सर्वनाम होगा।
   (iii) आप शब्द का प्रयोग किसी अन्य व्यक्ति में परिचय करवाने के लिए प्रयुक्त हो तो वाक्य में अन्य पुरुष वाचक सर्वनाम होगा।

# विशेषण

परिभाषा
संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाने वाले शब्दों को विशेषण कहा जाता है ।

जो शब्द विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण कहा जाता है और जिसकी विशेषता बताई जाती है, उसे विशेष्य कहा जाता है ।

जैसे – छोटा जादूगर करतब दिखा रहा है ।
यहाँ छोटा शब्द विशेषण है तथा जादूगर विशेष्य (संज्ञा) है ।

विशेष – विशेषण की पहचान का तरीका
किसी भी वाक्य में कैसा / कैसी / कैसे अथवा कितना / कितनी / कितने शब्दों से प्रश्न किये जाने पर इसके उत्तर के रूप में जो कोई भी शब्द लिखा जाता है । यह विशेषण माना जाता है ।

जैसे –
(i) अंकित कैसा लडका है ?
उत्तर – अंकित अच्छा/बुरा/भला/शैतान/चंचल लडका है ।
(ii) हरी तुम्हारे पास कितनी गायें है ?
उत्तर – मेरे पास पाँच/दस/सौ/हजारों गाये है ।

विशेषण के भेद – विशेषण मूलतः चार प्रकार के होते है ।
1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. संकेतवाचक (सार्वनामिक) विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण
ऐसे विशेषण शब्द जो किसी पदार्थ के रंग, रूप, गुण, दोष, आकार, दशा, स्थिति, स्थान, काल, समय, आदि की विशेषता को प्रकट करते है, वहाँ गुणवाचक विशेषण माना जाता है ।
जैसे – कृष्णमृग, सुन्दर बालिका, भले लोग, गंदी बस्ती, बडा लडका, पुराना मकान आदि

2. संख्यावाचक विशेषण
जो विशेषण शब्द किसी पदार्थ की संख्या को प्रकट करे । एक, दूसरी, चौगुनी, दोनों, शतक, दर्जनों, अनेक आदि ।

3. परिमाण वाचक विशेषण
ऐसे विशेषण शब्द जो किसी पदार्थ में मात्रा को प्रकट करते है उनमें परिमाण वाचक विशेषण माना जाता है ।
जैसे – दो लीटर तेल, हजार टन गेहूँ, थोडा सा पानी

4. सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण
विशेषण के रूप में प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को सार्वनामिक विशेषण कहते है ।

जैसे – (i) यह किताब मेरी है । (ii) वह लडका खाना खा रहा है । (iii) जो लोग मेहनत करते है वे अवश्य अपनी मंजिल पाते है ।

विशेषण के अन्य भेद
(i) व्यक्तिवाचक विशेषण
(ii) भिन्नतावाचक विशेषण

विशेषण की अवस्थाएँ – (3)
(i) मूलावस्था – जो विशेषण शब्द अपने मूल रूप में लिखा जाता है ।
जैसे – अतुल एक अच्छा लडका है ।

(ii) उत्तरावस्था – जब कोई विशेषण शब्द दो पदार्थो की तुलना करने के लिए प्रयुक्त होता है ।
जैसे – (i) गंगा यमुना से पवित्र नदी है ।
(ii) मानसी पटुतर लडकी है ।

पहचान – जब किसी विशेषण शब्द से पहले से शब्द लिखा हो अथवा विशेषण के बाद तर प्रत्यय जुडा हो तो वहाँ उत्तरावस्था मानी जाती है ।

(iii) उत्तमावस्था – जब कोई विशेषण शब्द अनेक पदार्थो में से किसी एक को चुनने में काम आता है, वहाँ उत्तमावस्था मानी जाती है ।

पहचान – जब विशेषण शब्द से पहले सबसे शब्द या विशेषण के बाद तम/इष्टा/तरीन प्रत्यय लगा हो वहाँ उत्तमावस्था होगी ।
जैसे – (i) स्नेहा कक्षा की पटुतम बालिका है ।
(ii) नवीन सबसे अच्छा लडका है ।
(iii) विद्यालय में व्यवस्थाएँ बेहतरीन है ।

प्रविशेषण
ऐसे शब्द जो किसी विशेषण की भी विशेषता को प्रकट करते है, वे प्रविशेषण कहलाते है ।
जैसे – (i) वह बहुत तेज दौडता है ।
(ii) अवनी अत्यंत सुंदर बालिका है ।

# क्रिया

- **वाक्य में जिस शब्द या शब्द-समूह से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते है, जैसे – खाना, पीना, पढना, सोना, जाना ।**
- क्रिया का अर्थ हैं करना। क्रिया के बिना कोई वाक्य पूर्ण नहीं होता हैं। किसी वाक्य में कर्ता, कर्म तथा काल की जानकारी भी क्रिया पद के माध्यम से होती हैं। हिंदी भाषा की जननी संस्कृत हैं तथा संस्कृत में क्रिया रूप को 'धातु' कहते हैं।
  - धातु – हिंदी क्रिया पदो का मूल रूप ही 'धातु' है।
  - धातु में 'ना' जोड़ने से हिंदी के क्रिया पद बनते है।

    **जैसे** – पढ़ + ना = पढ़ना, उठ + ना = उठना।
  - **मोहन खाना खा रहा है ।**
  - **हवा बह रही है । (करना-हवा बहने की क्रिया कर रही है ।)**
  - **पुस्तक अलमारी में है । (होना)**

**उपर्युक्त वाक्यों मे 'खा रहा है' 'बह रही है' क्रियापद है ।**

**क्रिया के भेद**

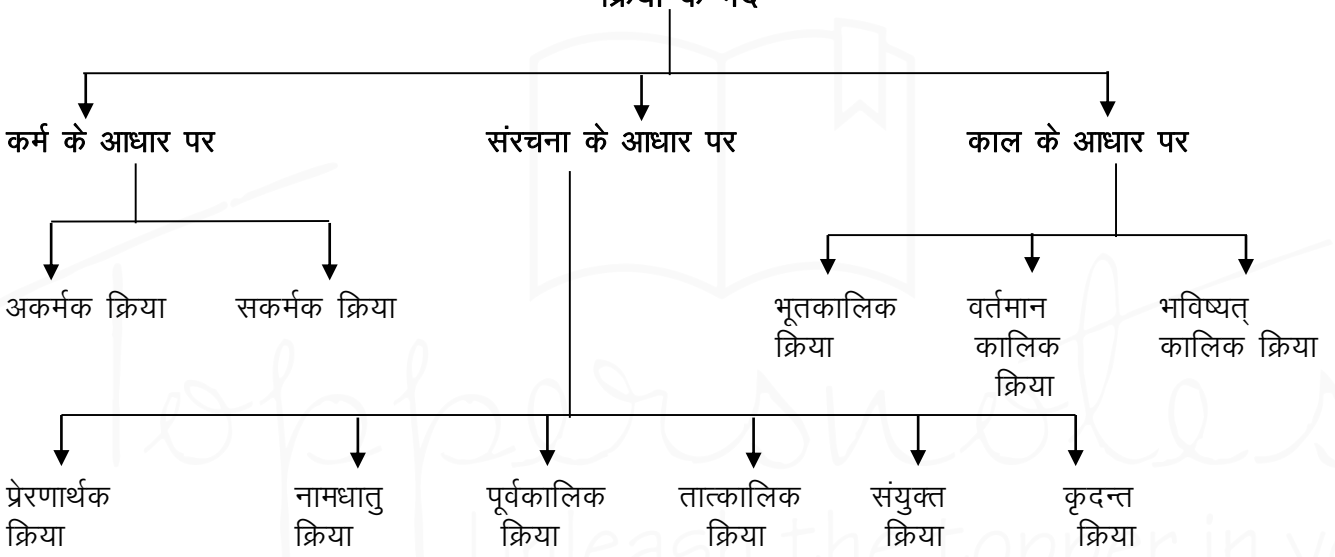


<u>वाक्य मे कर्म की संभावना के आधार पर भेद</u>

<u>अकर्मक और सकर्मक क्रिया</u> – किसी क्रिया के करने हेतु कर्म की आवश्यकता/संभावना होने या न होने के आधार पर क्रिया के मुख्यतः दो भेद है – सकर्मक और अकर्मक ।

(क) <u>अकर्मक क्रिया</u>

जिस वाक्य मे क्रिया का फल कर्म पर न पडकर केवल कर्ता पर ही पडता है अर्थात् जिस क्रिया के करने मे कर्म की आवश्यकता ही नही होती है, बिना किसी कर्म के क्रिया सम्पन्न हो सकती है, उसे अकर्मक क्रिया कहते है, जैसे –

- रमा सोती है ।
- नरेश दौड रहा है ।
- चिडिया उड रही है ।
- बच्चा रोता है ।

उपर्युक्त वाक्यों मे 'सोती है', 'दौड रहा है', 'उड रही है', 'रोता है' क्रियाओं के फल का प्रभाव क्रमशः रमा, नरेश, चिडिया और बच्चा कर्ता-पदों पर ही पडता है और ये क्रियाएँ बिना किसी कर्म के केवल कर्ता के द्वारा ही सम्पन्न हो सकती है ।

**अकर्मक क्रिया को भी पुनः दो भेदों में बाँट दिया जाता हैं।**

**(i) अपूर्ण अकर्मक क्रिया** – जिस क्रिया के साथ किसी कर्म की तो आवश्यकता नहीं होती पर किसी पूरक शब्द की आवश्यकता होती हैं। वह अपूर्ण अकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

**नोट – लगना, होना, निकलना** ये अपूर्ण अकर्मक क्रिया को प्रदर्शित करने वाली क्रियाएँ हैं।

**जैसे –**

- भेड़ प्यासी थी। ┐
- मैं एक छात्र हूँ। ┘ होना

- वह बड़ा ईमानदार निकला। ┐
- वह डरावना लगता हैं। ┘ लगना, निकलना

**(ii) पूर्ण अकर्मक क्रिया** – जिस क्रिया के साथ कर्म व पूरक शब्द दोनों की आवश्यकता न हो, वह पूर्ण अकर्मक क्रिया कहलाती हैं।

**जैसे –**

- कोयल कूक रही हैं।
- बच्चा रो रहा हैं।
- तोता आसमान में उड़ता हैं।

**नोट** – पूर्ण अकर्मक क्रिया में क्या शब्द से प्रश्न किए जाने पर कोई भी काल्पनिक उत्तर नहीं निकलता हैं।

## (ख) सकर्मक क्रिया

**जहाँ क्रिया के घटित होने की प्रक्रिया मे कर्म की आवश्यकता होती ही है, उसे सकर्मक क्रिया कहते है । सकर्मक क्रिया कर्म के बिना सम्पन्न हो ही नही सकती, जैसे –**

1. **राम पत्र लिखता है ।**
2. **लडके ने बेर खाए ।**
3. **मोहित पानी पीता है ।**
4. **अध्यापक प्रश्न पूछते है ।**

**उपर्युक्त वाक्यों मे 'लिखना', 'खाना', 'पीना', 'पूछना' क्रियाओं का प्रभाव क्रमशः पत्र, बेर, पानी व प्रश्न कर्मपदों पर पड रहा है, क्योंकि इनके बिना क्रिया पूर्ण हो ही नहीं सकती, अतः ये सकर्मक क्रियाएँ है । सकर्मक क्रिया की पहचान के लिए क्रिया से पहले 'क्या', 'किसको' लगाकर प्रश्न पूछा जाता है और उसका कोई-न-कोई उत्तर अवश्य आता है और वह उत्तर ही कर्म होता है, और वह क्रिया सकर्मक होती है, राम क्या लिखता है ? (पत्र), लडके ने क्या खाए ? (बेर), मोहित ने क्या पिया ? (पानी) ।**

**(i) अपूर्ण सकर्मक क्रिया** – जिस क्रिया के साथ कर्म के अलावा भी किसी पूरक शब्द की आवश्यकता बनी रहती हैं, तो वहाँ अपूर्ण सकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

**जैसे –**

- हमने उसे सरपंच **बनाया**।
- मैं उसे बहिन **मानता हूँ**।
- हम उसे ईमानदार **समझते हैं**।

**पहचान** – अपूर्ण सकर्मक क्रिया की श्रेणी में चयन (बनाना), चुनना, मानना, समझना आदि क्रियाएँ वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होती हैं।

**(ii) पूर्ण सकर्मक क्रिया** – जिस क्रिया के साथ केवल कर्म की ही आवश्यकता पड़ती हैं, अन्य किसी पूरक शब्द की नहीं, वहाँ पूर्ण सकर्मक क्रिया होती हैं।

**जैसे –**

- बच्चा खेल रहा हैं। (क्रिकेट)
- तुमने जीता। (मैच)
- तुमने रोका। (रास्ता)

**पहचान** – वाक्य में प्रयुक्त किसी क्रिया वाचक शब्द से पहले **क्या** शब्द से प्रश्न करने पर यदि उसका कोई काल्पनिक उत्तर प्राप्त हो जाता हैं, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया पूर्ण सकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

**पूर्ण सकर्मक क्रिया के पुनः दो उपभेद कर दिये जाते हैं।**

(i) एक कर्मक क्रिया
(ii) द्वि कर्मक क्रिया

**(i) एक कर्मक क्रिया –**

जिस वाक्य में क्रिया के साथ एक कर्म प्रयुक्त हो, उसे एक कर्मक क्रिया कहते हैं।

**जैसे** – 'माँ पढ़ रही हैं।' (यहाँ माँ के द्वारा एक ही कर्म पढ़ना हो रहा हैं।)

- उसने सेब व संतरे खरीदे। ┐
- मैनें गाड़ी खरीदी। ┘ कर्म खरीदना

**पहचान** – यदि किसी वाक्य में केवल क्या प्रश्न का ही उत्तर प्राप्त हो रहा हो, तो वहाँ प्रयुक्त क्रिया एक कर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

## क्रिया की पूर्णता के आधार पर भेद

### अपूर्ण क्रिया –

कुछ क्रियाओं का अपने-आप में अर्थ पूर्ण ही नही होता, इसलिए अर्थ पूर्ण करने के लिए किसी अन्य 'पूरक' शब्द पर निर्भर होना होता है जो क्रिया न होकर संज्ञा या विशेषण पद होता है, ऐसी क्रियाओं को अपूर्ण क्रिया कहते है, अर्थात् क्रिया अपना अर्थ स्वयं न देकर संज्ञा, विशेषण पद से ही दे पाती है, जैसे–

- अजीत श्याम को मूर्ख समझता है । ('मूर्ख'– विशेषण के बिना क्रिया 'समझता है' का अर्थ स्पष्ट नही होगा ।)
- अशोक जी हमारे गुरु थे । (गुरु–संज्ञापद के बिना 'थे' का अर्थ स्पष्ट नही होता ।)

स्पष्ट है कि इन वाक्यों मे प्रयुक्त पूरक (मूर्ख, गुरु–दोनो संज्ञापद) का लोप कर देने से वाक्य मे पूर्णता नही आती । ऐसे पूरक कर्मपूरक कहे जाते है, जो विशेषण और संज्ञा दोनो ही हो सकते है ।

### पूर्ण क्रिया –

जिस क्रिया-पद से क्रिया का अर्थ स्पष्ट हो जाए, पूरक के रूप मे और-क्रियापद (संज्ञा-विशेषण) की आवश्यकता नही हो, उसे पूर्ण क्रिया कहते है, जैसे–

1. लडका सोता है ।
2. लडका पढता है ।

यहाँ 'सोता है', 'पढता है' क्रियापद से पूर्ण अर्थ निकल जाता है । ये दोनो पद क्रियापद ही है । अतः ये पूर्ण क्रियाएँ है ।

**(ii) द्वि कर्मक क्रिया –**

जिस वाक्य में क्रिया के साथ दो कर्म प्रयुक्त हो, उसे द्वि कर्मक क्रिया कहते हैं।

**जैसे** – अध्यापक छात्रों को कम्प्यूटर सिखा रहे हैं।

क्या सिखा रहें हैं ? – कम्प्यूटर, किसे सिखा रहे हैं ? (छात्रों को) (छात्र सीख रहे हैं) इस प्रकार दो कर्म एक साथ घटित हो रहे हैं।

- सुमन अपनी बहन को हिंदी सिखाती हैं।
- अध्यापक ने छात्रों को हिंदी पढ़ाई।

**पहचान** – जब किसी वाक्य में किसे, क्या, किसको इन सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त हो रहें हो, तो वहाँ प्रयुक्त किया द्विकर्मक क्रिया मानी जाती हैं।

- द्विकर्मक क्रिया में प्रथम कर्म अप्राणीवाचक (निर्जीव) तथा द्वितीय कर्म प्राणीवाचक (सजीव) होगा।

**ध्यान देने योग्य बातें** – हिंदी में निम्न **सोलह क्रियाएँ** ऐसी क्रियाएँ हैं, जिनके साथ दोनों कर्म प्रयुक्त किये जाते हैं। अतः इन्हें नित्य द्विकर्मक क्रिया माना जाता हैं।

| | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | दुहना | 2. | माँगना |
| 3. | पकाना | 4. | सजा देना |
| 5. | रोकना | 6. | पूँछना |
| 7. | चुनना | 8. | कहना |
| 9. | उपदेश देना | 10. | जीतना |
| 11. | मथना | 12. | चुराना |
| 13. | ले जाना | 14. | हरण करना |
| 15. | खिंचना | 16. | ढ़ोना |

## क्रिया की संरचना के आधार पर भेद

### प्रेरणार्थक क्रिया –

जहाँ कर्ता खुद क्रिया को न करके दूसरे को क्रिया करने की प्रेरणा देता है वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया होती है । यहाँ कर्ता भी क्रिया तो करता है किन्तु वह प्रेरणा देने की क्रिया करता है । प्रेरणार्थक क्रियाओं मे 'वा' लगता है ।

सरपंच ने गाँव में तालाब बनवाया।

**नोट** – इसमें सरपंच ने स्वयं कार्य नहीं किया, बल्कि अन्य लोगों को प्रेरित कर उनसे तालाब का निर्माण करवाया, अतः यहाँ प्रेरणार्थक किया हैं।

- नरेश ने नाई से बाल कटवाए ।
- सुनीता ने अर्चना से पत्र लिखवाया ।
- मोहन ने माली से दूब कटवाई ।

सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक होती है ।

मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रिया –

मुख्य क्रिया के अर्थ को पूरा करने मे सहायता करने वाला क्रियापद सहायक क्रिया कहलाता है, जैसे –

- मैं गया हुआ था । (यहाँ गया मुख्य क्रिया है तथा हुआ था सहायक क्रिया है ।)
- सुरेश सुन रहा था । (सुन– मुख्य क्रिया है तथा रहा था– सहायक क्रियाएँ )

नामधातु क्रिया –

जब संज्ञा एवं विशेषण अर्थात् नामपद शब्दों के अंत मे प्रत्यय जोडने पर किसी क्रिया का निर्माण होता है, तब वह नामधातु क्रिया होती है । जैसे –

- सेठ ने मकान हथियाया । (हाथ–संज्ञापद)
- मुझ पर दृश्य फिल्माया । (फिल्म–संज्ञापद)
- लडकी बतियाई । (बात संज्ञापद)

**हाथ (संज्ञा)** – हथिया (नाम धातु) हथियाना (क्रिया)
अपना (सर्वनाम) – अपना (नाम धातु) अपनाना (क्रिया)
**जैसे** – रोहित, सुनीता के विवाह की जिम्मेदारी को अपना चुका हैं।

| संज्ञा से निर्मित नाम धातु | | सर्वनाम से निर्मित नामधातु | |
|---|---|---|---|
| हाथ | – हथियाना | अपना | – अपनाना |
| लाज | – लज्जाना | **विशेषण से निर्मित नाम धातु** | |
| बात | – बतियाना | ठण्डा | – ठण्डाना |
| लात | – लतियाना | साठ | – सठियाना |
| रंग | – रंगना | गर्म | – गर्माना |
| शर्म | – शर्माना | | |

पूर्वकालिक क्रिया –

जब कर्ता एक कार्य समाप्त कर उसी पल दूसरा कार्य आरम्भ करता है, तब पहली क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है । पूर्वकालिक क्रिया के अंत मे कर लगता है– सोकर, उठकर, जाकर आदि ।

- बच्चे दूध पीकर सो गए ।
  (सोने से पहले दूध पीया ।)
- रमेश खाना खाकर विद्यालय गया ।
- रमेश खाना खाने के बाद विद्यालय गया ।

लेकिन 'रमेश ने खाना खाया और उसके बाद विद्यालय गया' वाक्य मे पहली क्रिया पूर्वकालिक नही है, बल्कि दोनो ही क्रियाएँ स्वतंत्र क्रियाएँ है क्योकि दोनो क्रियाएँ दो अलग–अलग उपवाक्यों की क्रियाएँ है ।

तात्कालिक क्रिया –

यह क्रिया भी मुख्य क्रिया से पहले सम्पन्न हो जाती है । इसमें और मुख्य क्रिया में समय का अंतर नही होता, किन्तु पहली क्रिया के घटने के तत्काल बाद दूसरी क्रिया के घटने का बोध होता है जो 'ही' निपात से संभव होता है ।

- वह खाना खाते ही (तात्कालिक क्रिया) सो गया ।
- वह नहाते ही (तात्कालिक क्रिया) मंदिर चला गया ।

संयुक्त क्रिया –

जब दो या दो से अधिक क्रिया–धातुओं के योग से क्रियापद बनता है तो उसे संयुक्त क्रिया कहते है । संयुक्त क्रिया मे कई क्रियाओं के संयुक्त हो जाने से एक क्रिया का अर्थ निकलता है, जैसे –

- वह खाना खा चुका होगा ।
- दीक्षा लिखा करती होगी ।
- पानी बरसने लगा है ।
- मैं यहाँ रोज आ जाया करता हूँ ।
- दोपहर में लोग सो रहे होते है ।

इन सभी वाक्यों में पहला क्रियापद मुख्य क्रिया है तथा बाद के सभी क्रियापद सहायक क्रियाएँ है और मुख्य क्रिया तथा सहायक क्रियाओं को मिलकर बने क्रियापद–समूह संयुक्त क्रियाएँ है । सहायक क्रिया एक भी हो सकती है । (पढता है) और एक से अधिक भी जैसा कि ऊपर के वाक्यों में है ।

**कृदन्त क्रिया** – क्रिया शब्दों में जुड़ने वाले प्रत्यय 'कृत' प्रत्यय कहलाते हैं तथा कृत प्रत्यय के योग से बने शब्द कृदन्त कहलाते हैं। क्रिया शब्दों के अन्त में प्रत्यय योग से बनी क्रिया कृदन्त क्रिया कहलाती हैं।

| **क्रिया** | | **कृदन्त क्रिया** |
|---|---|---|
| लिख | – | लिखना, लिखता, लिखकर |
| चल | – | चलना, चलता, चलकर |